एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आम की खेती में उत्पादकता वृद्धि के तरीके

(*रूपा उज्ज्वल[1], अंजू यादव[1] एवं राजू यादव[2])
[1]फल विज्ञान विभाग, उद्यानिकी और वानिकी महाविद्यालय, झालावाड (कृषि विश्वविद्यालय, कोटा)
[2]सब्जी विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: rupaujjwal9530@gmail.com

आम की पैदावार बढ़ाने का एकमात्र तरीका अच्छा कृषि प्रबंधन है। इसमें उत्पादक, लाभदायक और टिकाऊ कृषि संचालन सुनिश्चित करने के लिए कई प्रमुख अभ्यास शामिल हैं। इसमें शामिल हैं:

उन्नत कृषि प्रबंधन प्रथाओं का कार्यान्वयन

1. **मृदा संरक्षण:** बार-बार मिट्टी की जांच, जैविक पदार्थ और उर्वरक की पूर्ति से मिट्टी उपजाऊ और आम के विकास के लिए उपयुक्त बनी रहती है। जड़ प्रणाली मिट्टी की स्थिति पर निर्भर करती है। इसलिए, कवर क्रॉपिंग और हरी खाद का उपयोग मिट्टी की संरचना और उर्वरता को बनाए रखने में मदद करता है।
2. **अंतराल और पौधों का घनत्व**: सही दूरी यह सुनिश्चित करती है कि हर पेड़ को पर्याप्त हवा, सूरज की रोशनी और पोषक तत्व मिलें, जिससे प्रतिस्पर्धा कम होगी और उत्पादन बढ़ेगा। जब प्रति हेक्टेयर अधिकतम स्थान उपयोग और उत्पादन के लिए बौने या अर्ध-बौने रूटस्टॉक्स का उपयोग किया जाता है, तो कुछ स्थितियों में उच्च घनत्व वाले पौधे लगाना फायदेमंद हो सकता है।
3. **कटाई और छंटाई:** लगातार छंटाई से प्रकाश का प्रवेश बढ़ता है, वायु संचार में सुधार होता है, और पेड़ के आकार को बनाए रखने में मदद मिलती है, जिसके परिणामस्वरूप फलों की गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार होता है। युवा आम के पेड़ों के लिए अच्छी ट्रेनिंग एक मजबूत नींव की गारंटी देती है, जो बेहतर फल भार को बढ़ावा देती है और शाखा-टूटने के जोखिम को कम करती है।

उत्कृष्ट और रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करना

स्थानीय तापमान के अनुकूल और रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले आमों का सही प्रकार चुनना महत्वपूर्ण है। कुछ क्रियाएँ इस प्रकार हैं:

1. **ग्राफ्टिंग:** रोग प्रतिरोधी रूटस्टॉक्स और अत्यधिक उत्पादक किस्मों के सायन का उपयोग करके उत्पादकता और फलों की गुणवत्ता में काफी वृद्धि की जा सकती है। इसके अलावा, हम उन पेड़ों को ग्राफ्ट करते हैं जो अक्सर बीज से उगाए गए पेड़ों की तुलना में जल्दी फल देते हैं।

2. **प्रमाणित बीज और पौधे:** प्रमाणित रोग-मुक्त बीज और पौधे खरीदने से पौधे का अच्छा विकास सुनिश्चित होता है[और बीमारी और कीटों के आक्रमण की संभावना कम हो जाती है। विश्वसनीय नर्सरियों से रोपण सामग्री प्राप्त करें। सख्त गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाओं का पालन करना महत्वपूर्ण है।
3. **किस्म का चयन**: स्थानीय जलवायु परिस्थितियों और बाजार के स्वाद के अनुकूल किस्मों का चयन उत्पादकता और लाभप्रदता में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकता है। टॉमी एटकिंस, केसर और अल्फांसो स्वाद, शेल्फ लाइफ और बाजार की मांग के लिए कुछ लोकप्रिय किस्में हैं।

जल उपयोग दक्षता प्रणाली

आम की खेती जल प्रबंधन पर बहुत ज़्यादा निर्भर करती है। प्रभावी सिंचाई प्रणाली का उपयोग करने से उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

1. **ड्रिप सिंचाई:** सीधे जड़ क्षेत्र में पानी पहुंचाकर, ड्रिप सिंचाई पेड़ों के लिए पर्याप्त जलयोजन सुनिश्चित करती है और पानी की बर्बादी को कम करने में मदद करती है।
2. **मल्चिंग:** आम के पेड़ों के आधार के चारों ओर मल्चिंग करने से मिट्टी की नमी को संरक्षित करने, तापमान को नियंत्रित करने और खरपतवार की वृद्धि को रोकने में मदद मिलती है, जिसके परिणामस्वरूप पानी का बेहतर उपयोग होता है। जैसे-जैसे वे विघटित होते हैं, खाद, पत्ते और पुआल सहित जैविक मल्च मिट्टी को और समृद्ध कर सकते हैं।

3. **वर्षा जल संचयन:** वर्षा जल संग्रहण उपकरणों का उपयोग करने से सूखे के समय में अतिरिक्त पानी की आपूर्ति में मदद मिलेगी। तालाबों या टैंकों में वर्षा जल को इकट्ठा करके और संग्रहीत करके सिंचाई की ज़रूरतों को बढ़ाया जा सकता है।

एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन (IPDM)

कीट और बीमारियाँ आम उत्पादन के लिए खतरा पैदा करती हैं। कीटों और बीमारियों के प्रबंधन के लिए एकीकृत रणनीति में निम्नलिखित कदम शामिल हैं:

1. **नियमित निगरानी:** कीटों और बीमारियों के सबूत के लिए नियमित रूप से पेड़ों का निरीक्षण करने से उन्हें जल्दी पहचानने और त्वरित प्रतिक्रिया करने में मदद मिलती है। जाल और निगरानी उपकरण रोग के प्रकोप और कीटों की संख्या को ट्रैक करने में मदद कर सकते हैं।
2. **जैविक नियंत्रण:** कीटों की संख्या कम करने के लिए प्राकृतिक शिकारियों और लाभकारी कीटों का उपयोग करने से रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, लेडीबग्स एफिड्स को नियंत्रित कर सकते हैं। ट्राइकोग्रामा ततैया फल मक्खी की संख्या कम करने में सहायता करते हैं।
3. **जैविक कीटनाशक:** पर्यावरण के अनुकूल और जैविक कीटनाशकों का उपयोग करके, जैव विविधता और मिट्टी की स्थिति को संरक्षित करते हुए कीटों और बीमारियों को नियंत्रित किया जा सकता है। जैविक आम की खेती में आमतौर पर तांबे पर आधारित रसायन, सल्फर और नीम के तेल का उपयोग किया जाता है।

4. **अन्य विधियाँ:** फसल चक्र, अंतर-फसल और स्वच्छता जैसी सांस्कृतिक प्रथाओं को लागू करने से कीट और रोग के दबाव को कम करने में मदद मिल सकती है। संक्रमित पौधों के हिस्सों, गिरे हुए फलों और मलबे को हटाने और नष्ट करने से रोगजनकों के प्रसार को रोका जा सकता है।

पोषक तत्व प्रबंधन

अच्छा पोषक तत्व प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि आम के पौधों को इष्टतम विकास और फल उत्पादन के लिए सभी आवश्यक तत्व मिलें:

1. **संतुलित उर्वरक:** मिट्टी परीक्षण निष्कर्षों के आधार पर, मैक्रोन्यूट्रिएंट्स (नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम) और माइक्रोन्यूट्रिएंट्स (जस्ता, बोरॉन और मैंगनीज) को मिलाएं। बहुत अधिक या बहुत कम उर्वरक पेड़ की उत्पादकता और स्थिति से समझौता कर सकता है।
2. **जैविक खाद:** खाद और कम्पोस्ट जैसे जैविक खादों का उपयोग करने से मिट्टी की संरचना, उर्वरता और सूक्ष्मजीवी गतिविधि में सुधार होता है, जिससे जमीन की स्थिति में सुधार होता है और पेड़ों की बेहतर पैदावार होती है। जैविक पदार्थ मिट्टी की जल धारण क्षमता और पोषक तत्वों की उपलब्धता को बढ़ाते हैं।
3. **पत्तियों पर खाद डालना:** खास तौर पर महत्वपूर्ण विकास चरणों में, पत्तियों पर खाद छिड़कने से कमी को तेजी से दूर किया जा सकता है और पौधों के स्वास्थ्य में सुधार किया जा सकता है। फूल आने और फल लगने के मौसम में सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव करने से फलों के सेट और विकास में सुधार होता है।
4. **जैव उर्वरकों का उपयोग:** जैव उर्वरकों में शामिल लाभकारी सूक्ष्मजीव पोषक तत्वों की उपलब्धता और अवशोषण को बढ़ाने में मदद करते हैं। जबकि नाइट्रोजन-फिक्सिंग बैक्टीरिया पौधों को अतिरिक्त नाइट्रोजन की आपूर्ति कर सकते हैं, माइकोरिज़ल कवक फॉस्फोरस अवशोषण में सुधार करता है।

निष्कर्ष

आम की खेती का उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक कृषि तकनीकों और प्रभावी संसाधन प्रबंधन के साथ-साथ सक्रिय रोग और कीट नियंत्रण की आवश्यकता होती है। ये शीर्ष पाँच तकनीकें किसानों को इस प्रिय फल की बढ़ती बाज़ार मांग को पूरा करने, अपने आम की पैदावार में सुधार करने और अपने आम के खेत की स्थिरता की गारंटी देने में मदद कर सकती हैं। इन तरीकों का पालन करने से न केवल उत्पादन बढ़ता है बल्कि आम की खेती को दीर्घकालिक रूप से व्यवहार्य बनाने में भी मदद मिलती है। पारंपरिक विशेषज्ञता को नई तकनीक के साथ मिलाने से एक मजबूत और कुशल आम की खेती प्रणाली बनाने में मदद मिलेगी जो उपभोक्ताओं, किसानों और आसपास के लोगों को समान रूप से लाभ पहुंचाएगी।